

---

shrIgurustotram

श्रीगुरुस्तोत्रम्

Document Information

---

Text title : gurustotra from bRihatpAkaM haMsa saMhita

File name : gurustotrambRihatpAkamhaMsa.itx

Category : deities\_misc, gurudev

Location : doc\_deities\_misc

Author : Traditional

Transliterated by : DPD

Proofread by : DPD

Source : bRihatpAkaM haMsya saMhitAntrArgatam

Latest update : January 31, 2016

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

September 17, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

## श्रीगुरुस्तोत्रम्



बृहत्पाकं हंस्यां संहितायां

ज्ञानात्मानं परमात्मानं दानं ध्यानं योगं ज्ञानम् ।  
जानन्नपि सुन्दरिमातर्न न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥ १ ॥

प्राणं देहं गेहं राज्यं भोगं मोदा भक्तिं पुत्रम् ।  
मन्ये मित्रं वितकलत्रं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥ २ ॥

वानप्रस्थं यतिविधधर्मं पारमहंस्यं भिक्षुकं चरितम् ।  
साधो सेवा बहुसुरभक्तिर्न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥ ३ ॥

विष्णो भक्तिः पूजनं चरितं वैष्णवसेवा मातरि भक्तिम् ।  
विष्णोरिव पितृसेवनयोगो न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥ ४ ॥

प्रत्याहारं चेन्द्रियजपताप्राणायामन्यानिर्विधानम् ।  
इष्टै पूजाजपतपभक्तिर्न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥ ५ ॥

काली दुर्गा कमला भुवना त्रिपुरामीमां बगलापूर्णा ।  
श्रीमातङ्गी धूमा तारा एता विधात्रिभुवनस्तरा  
न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥ ६ ॥

मात्स्यं कौर्मं श्रीवाराहं नरहरिरूपं वामनचरितम् ।  
अवतारादिकमन्यत् सर्वं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥ ७ ॥

श्रीरघुनाथं श्रीयदुनाथं श्रीभृगुदेवं बौद्धं कल्किम् ।  
अवतारानिति दशकं मन्ये न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥ ८ ॥

गङ्गा काशी काञ्ची द्वारा मायाऽयोध्याऽवना मथुरा ।  
यमुना रेवा परतरतीर्थं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥ ९ ॥

गोकुल गमनं गोपुरमणं श्रीवृन्दावनमधुपुर भटनम् ।  
एतत् सर्वं सुन्दरिमातर्न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥ १० ॥

तुलसीसेवा हरिहरभक्तिर्गङ्गासागरसङ्गममुक्तिम् ।

किमपरमधिकं कृष्णोभक्तिरेतत्सर्वं

सुन्दरिमातर्न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥ ११ ॥

एतत् स्तोत्रं पठति च नित्यं मोक्षज्ञानी सोऽयति धन्यः ।

ब्रह्माण्डान्तर्यद्यद् ज्ञेयं सर्वं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥ १२ ॥

॥ इति बृहत्पाकं हंस्यां संहितायां श्रीशिवपार्वती

संवादे श्रीगुरुस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

Encoded and proofread by DPD

---



*shrIgurustotram*

pdf was typeset on September 17, 2023



Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

